ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in July 2025

अभिजन वर्ग की समाज में भूमिका

कमलजीत सिंह, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. नन्द किशोर सोमानी, सह–आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

वैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था एवं सन्तुलन के निर्धारण में जिन प्रमुख संरचनाओं की आवश्यकता होती है, उनमें अभिजन वर्ग भी प्रमुख है। प्रत्येक समाज में किसी न किसी प्रकार का सामाजिक संस्तरण होना अति आवश्यक है। अतः प्रत्येक समाज में प्रमुखतया दो वर्गों का अस्तित्व अवश्य पाया जाता है। अभिजन वर्ग की अवधारणा और समाज में इसके प्रभाव को स्पष्ट करने की दृष्टि से ही पैरेटो ने इस तत्सम्बन्धी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। अभिजन वर्ग संरचना समाज में शक्ति संरचना और निर्णय निर्माण प्रक्रिया में प्रकट समाज के आधारभूत मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है।

अधिकांशतः अभिजन शब्द का प्रयोग, समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने वालों के लिये किया जाता है। समाज के राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, किसी भी क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त करने वालों को अभिजन कहते है। अभिजन को परिभाषित करने की दिशा में, पैरोटो व मोस्का लगभग समकालीन विचारक थे दोनों में अभिजन के संदर्भ में अनुपात के दृष्टिकोण से अन्तर थाए पैरेटो ने अभिजन की परिभाषा करते हुये कहा है "इसी प्रकार,मानवीय गतिविधि के, प्रत्येक क्षेत्र में अंक निर्धारित किये जाये और जिन लोगों को किसी विशिष्ट मानवीय गतिविधि के क्षेत्र में सर्वोच्च अंक मिले और उनका एक वर्ग बनाया जाये, तो उस वर्ग को अभिजन कहेंगे"।

इस प्रकार, पैरेटो ने अभिजन शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिये किया है, जो बुद्धि, चरित्र, कुशलता तथा क्षमता के क्षेत्र में उच्च स्थान रखते है। पैरेटो के समान श्रीमोस्का ने "अभिजन वर्ग को एक संगठित अल्प–वर्ग कहा है।

संगठनकर्ता का स्थान आविष्कार और आविष्कारों का स्थान, संगठनकर्ता ले लेते हैं। परेटो के शब्दों में ''मानव इतिहास अभिजनों के प्रतिस्थापना का इतिहास है, जिसमें एक का विकास होता है दूसरे का ह्रास होता है। यह पतन न केवल संख्या की दृष्टि से होता है बल्कि गुणों की दृष्टि से भी अपनी शक्ति खो देते हैं, दसू रे लोग शक्ति प्राप्त कर लेते है। अंत में परेटो ने लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी अभिजनों के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया है कि ''लोकतंत्र में अभिजन राजनीतिक दलों, शासक दल तथा विरोधी दल के प्रतिद्वन्दी नेतृत्व में निहित रहते है, जो व्यक्ति इनमें किसी प्रकार का भाग नहीं लेना चाहते वे अभिजन की श्रेणी में नहीं आते है, इसके अतिरिक्त विभिन्न हित समूह तथा श्रम संघ जो आंतरिक मामले तथा राष्ट्रीय उत्पादन में क्रियाशील रहते हैं, वे एक भिन्न प्रकार के अभिजन वर्ग का निर्माण करते है। परेटो ने अपने ग्रन्थों में इस बात को भी बताने का प्रयास किया है कि, किस प्रकार शासक वर्ग अपने को सत्ता में बनाए रखता है तथा अधीनस्थ वर्ग पर शासन करता है। परेटो के शब्दों में ''यदि अधीनस्थ वर्ग शासक वर्ग को सत्ता से हटाने के लिए प्रयास करता है तो शासक वर्ग की सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि, शासक वर्ग अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए किस सीमा तक वाक्छल, कपट और भ्रष्ट साधनों का इस्तेमाल करता है। नेतृत्वहीन, अक्षम तथा असंगठित होने पर अधीनस्थ वर्ग किसी भी प्रकार की शासन पद्धति स्थापित करने में असमर्थ रहते है।

मोस्का के शब्दो में ''सभी राजनीतिक सरंचनाओं में समान रूप से पाए जाने वाले तत्वों और प्रवृत्तियों में से एक तत्व इतना स्पष्ट है कि, विहगंम दृष्टि डालने पर भी दिखाई पड़ जाता है। जो समान नाम मात्र के लिए ही विकसित हो पाए है, जिसमें सभ्यता का विकास कठिनता से हुआ है। उनसे लेकर अत्यधिक विकसित और शक्तिशाली समाजों तक प्रत्यके समाज में दो वर्ग उभर आए है– 1. शासक वर्ग 2. शासित वर्ग। प्रथम वर्ग में लोगों की संख्या कम होती है, लेकिन समस्त राजनीतिक क्रिया कलाप उन्हीं के द्वारा किए जाते है, शासन की समस्त शक्ति इन्ही के हाथों में निहित होती है और शासन की शक्ति का उपयोग भी इन्ही के द्वारा होता है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

मानवीय सम्बन्धों के इतिहास में 'नेतृत्व' पहले कभी उतना महत्वपूर्ण नही था, जितना आज है। आज किसी देश की सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन एवं रूपान्तरण में नेतृत्व की भूमिका विशेष रूप से परिलक्षित होती है। नेता विशेषकर अभिजन, चाहे वे ग्रामीण, नगरीय अथवा किसी भी समाज के हो, उनको समाज में एक विशेष दर्जा प्राप्त होता है। ये अभिजन जनता की आकांक्षाओं और भावनाओं के

प्रतिनिधि तथा नागरिक स्वतंत्रता के संरक्षक होते है। इन्हें सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन का शिल्पकार माना जाता है। इनकी एक पृष्ठभूमि होती है, इस कारण जन साधारण के लिए इनका विशेष महत्व होता है।

जनतंत्र शासन व्यवस्था समानता के आधारभूत सिद्धान्त पर आधारित होती है परन्तु लोकतन्त्र में भी व्यवहारिक रूप से समानता के सिद्धान्त का पूर्णरूपेण पालन नहीं हो पाता है। विभिन्न कारण जैसे–सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, वंशानुगत आधार, धर्म–जाति भेद, ज्ञान, शिक्षा तथा कार्य करने की कुशलता आदि लोकतन्त्र में राजनीतिक समानता के सिद्धान्त को अर्थहीन बना देते है और इन्हीं असमानताओं के परिणामस्वरूप कुछ "विशिष्टजन "शासन में पहुँचकर शासन व्यवस्था का संचालन करते है, इन्ही विशिष्ट लोगों को "अभिजन", "श्रेष्ठजन" अथवा 'इलीट' के नाम से जाना जाता है।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

अभिजन वर्ग के आधिपत्य का रहस्य अल्प समूह की संगठन क्षमता है। अभिजनों की स्थिति उसके सदस्यों में ऐसे गुणों के कारण होती है, जिनका समाज में पर्याप्त सम्मान होता है। ये गुण धन, सार्वजनिक लाभ के प्रति अभिरूचि, सैनिक पराक्रम अथवा धर्माधिकारी वर्ग में स्थिति इत्यादि हैं। इन गुणों के कारण अल्पसंख्यक समूह के सम्बद्ध शक्ति में परिणत होने पर ही अभिजनों की नियंत्रणकारी क्षमता बढ़ती है। ऐसा करने में वे समाज की अन्य शक्तियों के विरूद्ध अपनी सामूहिक शक्ति को प्रदर्शित करते हैं। मोस्का का मत है कि, अल्पसंख्यक समूह होने के नाते, उन्हें यह लाभ प्राप्त है। एक छोटा समूह बड़े समूह की अपेक्षा, सरलता से संगठित हो सकता है। इसके अतिरिक्त संचार एवं सूचना के माध्यम द्वारा इनके सदस्यों के मध्य विचारों का आदान–प्रदान शीघ्रता से सम्भव है। इस प्रकार, अभिजन, अल्पसंख्यक समूह, अपनी समूह चेतना, सशक्ति एवं अभिसंधि के बल पर, शेष समाज पर, अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर लेता है। अभिजनों की तकनीकि श्रेष्ठता, उन्हे शासित वर्ग की स्थिति प्रदान करती है। इसके विपरीत अशासित वर्ग असंगठित होता है। इस कारण, वह व्यक्तियों का संकलन है, जिसका न कोई सामूहिक उद्देश्य और न कोई स्वीकृत संचार व्यवस्था अथवा समन्वित नीति होती है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के भौतिक साधनों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग की सामाजिक स्थिति तथा उनके पूर्वजों की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
4. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के राजनीतिक सहभागिता के अवधि का अध्ययन करना।
5. एकाकी परिवार से सम्बन्धित राजनीतिक उच्चस्तर वर्गो में अन्य पारिवारिक स्वरुपों से प्रस्थिति जागरुकता का अध्ययन करना।
6. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग की पारिवारिक संरचना का, विभिन्न क्षेत्र के प्रति कार्योन्मेष पर अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

समकालीन भारत में राजनीतिक अभिजन के मूल्य एवं भूमिका में परिवर्तन सशक्त चुनौती है सामाजिक उद्गम सशक्त चुनौती है। सरकार राजनीतिक अभिजन के विकास पर विशेष ध्यान दे रही है। आज जितने भी अध्ययन राजनीतिक अभिजन के मूल्य एवं भूमिका से सम्बन्धित किये गये हैं, उनके आधार पर जो भी निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये, उनमें कुछ न कुछ विसंगतियाँ अवश्य रह गयी। जहाँ तक राजनीतिक अभिजनों का सवाल है, उनके मूल्य एवं भूमिका में परिवर्तन में उनकी भूमिका विशेष रूप से दृष्टिगत होती है। इस प्रकार सामाजिक नेतृत्व पर, अध्ययन की लम्बी परम्परा विद्यमान है। परन्तु सामान्यतः यह सभी अध्ययन नेतृत्व के राजनीतिक एवं आर्थिक पक्ष को ही मुख्यतः उजागर करते है। इसके सामाजिक पक्ष को भी स्पष्ट करने की आवश्यकता है। अब तक इस क्षेत्र में जो भी अध्ययन हुए हैं, वे अधिकाशंतः अंग्रेजी भाषा में है, हिन्दी भाषा में इस स्तर की, इस विषय सम्बन्धित पुस्तकें एवं अध्ययन पर्याप्त नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में किया गया, एक विनम्र प्रयास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अब्बासयूल, वाई0वी0 : 1978 शिड्यूल कास्ट इलीट् प्रगति आर्ट प्रिन्टर्स, हैदराबाद।

- अन्नू मेनन मजूमदार : 1964 "सोशल वेल्फये र इन इण्डिया", बाम्बे एशिया, पृ0 87–120, शकुन्तल राव शास्त्री, विमेन इन द सेक्रेट लाज बाम्बे, 1952.
- अरोरा, सतीश के0 : 1973 सोशल बैंक ग्राउण्ड ऑफ दि फिफ्थ लोकसभा, इ0पी0 डब्ल्यू0 (विशेष अंक) (31–33)
- आर0 प्रेस्थस : 1971 उद्धृत एफ0जी0 काटलस तथा अन्य,पेग्विन बुक आपन यूनिवर्सिटी प्रेस,पृ0 331. 258
- आक्सर लेविस : 1955 "गुफ डाइनामिक्स इन नार्थ इण्डियन विलेज" – ए स्टडी इन फैक्सन, उद्धृत रघुराज गुप्त तथा एस0 एन0 मुन्शी, पूर्वोक्त, पृ0 133–134.
- स0एन0 मुन्शी, :"ग्रामीण समाजशास्त्र भारतीय परिवेश में" विवेक प्रकाशन,259 जवाहर नगर, दिल्ली 136.